वर्ष 10, अंक 112

सहयोग शुल्क : रु.1 / मई 2026

दिव्यांग सेतु

संपादक : संतश्री ॐऋषि प्रितेषभाई

“दिव्यांगता शरीर में नहीं, सोच में होती है—
जिसने मन जीत लिया, उसने दुनिया जीत ली।”

(प .पू .संतश्री सदगुरु ॐऋषि स्वामी)

“दिव्यांगजन ‘कमज़ोर’ नहीं, बल्कि ‘दिव्य शक्ति’ के प्रतीक हैं,
जो अपने साहस से देश को प्रेरित करते हैं।”

(प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी)

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रलपाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटी से असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदनपत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाणपत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाणपत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाणपत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

समाज में अक्सर दिव्यांगता को एक सीमा या कमजोरी के रूप में देखा जाता है, लेकिन सोहना-मोहना, देव मिश्रा, खिरोधर प्रसाद और शैलेश कुमार जैसे व्यक्तित्व इस धारणा को अपनी जीवंत इच्छाशक्ति से चुनौती देते हैं। ये केवल व्यक्ति नहीं, बल्कि अटूट आत्मविश्वास के वे उदाहरण हैं जो सिखाते हैं कि असली ताकत शरीर में नहीं, मन की दृढ़ता में होती है। जन्म से एक-दूसरे से जुड़े होने के बावजूद सोहना-मोहना ने अपनी शिक्षा और सरकारी नौकरी के जरिए समाज की बंदिशों को तोड़ा, तो वहीं रेल दुर्घटना में अपने दोनों पैर गंवाने वाले देव मिश्रा ने फिटनेस की दुनिया में अपनी पहचान बनाकर यह साबित किया कि उड़ान पैरों से नहीं, बल्कि बुलंद हौसलों से भरी जाती है।

इसी कड़ी में खिरोधर प्रसाद का संघर्ष और उनके परिवार का साथ हमें धैर्य व सकारात्मकता का पाठ पढ़ाता है। वहीं, खेल के मैदान में हाई जंप के जरिए गोल्ड मेडल जीतने वाले शैलेश कुमार की सफलता यह संदेश देती है कि यदि लक्ष्य स्पष्ट हो, तो कोई भी ऊँचाई नामुमकिन नहीं है। इन सभी नायकों की कहानियों में एक समानता है—इन्होंने अपनी परिस्थितियों के आगे घुटने टेकने के बजाय उन्हें अवसर में बदल दिया।

आज समय की मांग है कि समाज अपना दृष्टिकोण बदले। दिव्यांगजनों को सहानुभूति या दया की नहीं, बल्कि समान अवसर, सम्मान और एक समावेशी वातावरण की आवश्यकता है। जब हम उनकी बाधाओं के बजाय उनकी प्रतिभा पर ध्यान देंगे, तभी सही अर्थों में समाज का विकास होगा। ये नायक हमें सिखाते हैं कि जिंदगी की कोई भी बाधा इतनी बड़ी नहीं होती जिसे पार न किया जा सके। वाकई, ये सभी लोग दिव्यांगता की नहीं, बल्कि 'दिव्य शक्ति' की पहचान हैं, जो एक मजबूत और प्रेरणादायक समाज की नींव रख रहे हैं।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

मई 2026, पृष्ठ संख्या – 16

वर्ष – 10 | अंक – 112

✦ प्रेरणास्त्रोत और संपादक ✦

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्गुरु ॐऋषि स्वामी ।

✦ सह-संपादक ✦

मिहिरभाई शाह
मो. 97241 81999

✦ संपर्क-सूत्र ✦

सेवा समर्पण फाउण्डेशन
ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट(NGO)

Trust Reg. No.: E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट, अन्नपूर्णा पार्टी प्लॉट के सामने, नया विकासगृह रोड, पालडी, अहमदाबाद - ३८०००७

(मो.) 99749 55365, 9974955125

✦ मुद्रक ✦

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.
आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6
Phone : 079 26405200

वोइस टू दिव्यांग

“नि:शुल्क थेरेपी शिविर: एक सराहनीय प्रयास”

अजमेर में राजस्थान महिला कल्याण मण्डल द्वारा दिव्यांग बच्चों के सर्वांगीण विकास और उनके अभिभावकों के मार्गदर्शन के उद्देश्य से दो दिवसीय नि:शुल्क थेरेपी परामर्श शिविर का सफल आयोजन किया गया। यह शिविर पंचशील नगर स्थित अद्वैत शीघ्र हस्तक्षेपण केंद्र में आयोजित हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में बच्चों और उनके अभिभावकों ने भाग लेकर विशेषज्ञों से लाभ प्राप्त किया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ, जिसमें मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. ज्योत्सना रंगा, प्रिया भार्गव और डॉ. कुमुद शर्मा सहित कई गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

शिविर के पहले ही दिन लगभग 250 बच्चों ने सेवाओं का लाभ उठाया, दिल्ली एनसीआर से आईं ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट डॉ. कुमुद शर्मा सहित विशेषज्ञों की टीम ने बच्चों का विस्तृत मूल्यांकन कर नि:शुल्क परामर्श और थेरेपी प्रदान की। टीम में फिजियोथेरेपिस्ट, स्पीच विशेषज्ञ और साइकोलॉजिस्ट भी शामिल थे। विशेषज्ञों ने अभिभावकों को बच्चों की जरूरतों के अनुसार थेरेपी, व्यायाम और दैनिक देखभाल के तरीके समझाए। साथ ही, विकासात्मक माइलस्टोन की जानकारी देकर घर पर बेहतर सहयोग के लिए मार्गदर्शन दिया गया। कई बच्चों को मौके पर ही थेरेपी सत्र भी प्रदान किए गए, जिससे अभिभावकों को व्यावहारिक अनुभव मिला।

यह शिविर न केवल बच्चों के उपचार का माध्यम बना, बल्कि अभिभावकों में जागरूकता और आत्मविश्वास बढ़ाने में भी सहायक रहा। इस पहल ने यह संदेश दिया कि सही मार्गदर्शन और समय पर हस्तक्षेप से दिव्यांग बच्चों के जीवन में सकारात्मक बदलाव संभव है।

संघर्ष से संकल्प तक

पंजाब के अमृतसर से सामने आई सोहना और मोहना की कहानी केवल एक खबर नहीं, बल्कि मानव हौसलों की एक जीवंत मिसाल है। जन्म से ही एक-दूसरे से जुड़े इन जुड़वां भाइयों का निचला शरीर आपस में जुड़ा हुआ है, जो उनके जीवन को सामान्य से कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण बनाता है। लेकिन जहां आमतौर पर छोटी-छोटी परेशानियां लोगों को निराश कर देती हैं, वहीं सोहना और मोहना ने अपनी इस स्थिति को कभी कमजोरी नहीं बनने दिया।

उनके जीवन की शुरुआत ही संघर्षों से भरी रही। जब वे महज दो महीने के थे, तब उनके माता-पिता ने उन्हें छोड़ दिया। उस बेहद नाजुक उम्र में उनका सहारा बना Pingalwara Charitable Trust, जिसने उन्हें न सिर्फ आश्रय दिया, बल्कि एक नई जिंदगी भी दी। यही संस्था उनका घर बनी, जहां उन्हें शिक्षा, संस्कार और आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा मिली। सीमित संसाधनों और कठिन परिस्थितियों के बावजूद, उन्होंने कभी हार नहीं मानी। उन्होंने पढ़ाई को अपना आधार बनाया और धीरे-धीरे अपने जीवन को नई दिशा देने का प्रयास किया।

सोहना और मोहना की सबसे बड़ी खासियत यह है कि उन्होंने अपनी परिस्थितियों को अपनी पहचान नहीं बनने दिया। उन्होंने यह समझ लिया था कि उनकी असली पहचान उनकी मेहनत, लगन और सोच से बनेगी। यही सोच उन्हें हर दिन आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रही। उनकी कहानी यह बताती है कि अगर सही मार्गदर्शन और समर्थन मिल जाए, तो कोई भी व्यक्ति अपनी सीमाओं से ऊपर उठ सकता है। Pingalwara जैसे संस्थान ने उन्हें न केवल जीवन दिया, बल्कि जीने का आत्मविश्वास भी दिया।

समय के साथ उनकी मेहनत रंग लाई और उन्होंने वह मुकाम हासिल किया, जिसकी कल्पना भी बहुत से लोग नहीं कर पाते। हाल ही में सोहना और मोहना को Punjab State Power Corporation Limited में नौकरी मिली है। यह उपलब्धि उनके वर्षों के संघर्ष, धैर्य और समर्पण का परिणाम है।दोनों भाइयों को एक ही पद पर नियुक्त किया गया है और उन्हें हर महीने लगभग बीस हजार रुपये का वेतन मिलेगा।

यह केवल उनकी व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए गर्व की बात है। यह साबित करता है कि अगर अवसर और समर्थन मिले, तो दिव्यांगजन भी हर क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं।उनकी सफलता समाज की उस सोच को चुनौती देती है, जिसमें दिव्यांगजनों को सीमित नजर से देखा जाता है। सोहना और मोहना ने यह दिखा दिया कि दिव्यांगता किसी व्यक्ति की पहचान नहीं होती—उसकी असली पहचान उसकी मेहनत, आत्मविश्वास और जज्बा होता है। वे हमेशा अपनी सफलता का श्रेय Pingalwara Charitable Trust को देते हैं। उनका मानना है कि इस संस्था के सहयोग के बिना वे इस मुकाम तक नहीं पहुंच पाते। यह संस्था उनके लिए केवल एक आश्रय नहीं, बल्कि एक मजबूत आधार रही, जिसने उन्हें आत्मनिर्भर बनने की राह दिखाई।

आज दोनों भाई न केवल अपनी नौकरी से संतुष्ट हैं, बल्कि समाज में एक सकारात्मक संदेश भी फैला रहे हैं। उनकी मुस्कान, उनका आत्मविश्वास और उनका संघर्ष यह सिखाता है कि जिंदगी में चाहे कितनी भी मुश्किलें क्यों न हों, अगर इंसान ठान ले, तो वह हर बाधा को पार कर सकता है।

"दिव्यांग सेतु" जैसे मंचों के लिए उनकी कहानी एक सशक्त प्रेरणा है। यह हमें सिखाती है कि हमें दिव्यांगजनों को सहानुभूति नहीं, बल्कि समान अवसर और सम्मान देना चाहिए।

सोहना और मोहना की यह यात्रा हमें यह एहसास कराती है कि असली ताकत शरीर में नहीं, बल्कि मन और हौसलों में होती है। उनकी कहानी हर उस व्यक्ति के लिए एक प्रेरणा है, जो जीवन में किसी भी कठिनाई का सामना कर रहा है।

वोइस टू दिव्यांग

"टूटे पैरों से नहीं, अटूट हौसलों से उड़ान भरता देव मिश्रा"

बिहार के बेगूसराय से आने वाले देव मिश्रा आज उन लाखों लोगों के लिए प्रेरणा बन चुके हैं, जो जीवन में कठिनाइयों के सामने खुद को कमजोर महसूस करने लगते हैं। देव की कहानी यह साबित करती है कि अगर इरादे मजबूत हों, तो कोई भी बाधा इंसान को आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती।देव मिश्रा का जीवन एक सामान्य युवा की तरह ही चल रहा था, लेकिन एक दर्दनाक रेल दुर्घटना ने उनकी पूरी जिंदगी बदल दी। इस हादसे में उन्होंने अपने दोनों पैर गंवा दिए।

शुरुआती दिनों में देव के लिए यह समय बेहद कठिन रहा। शारीरिक दर्द के साथ-साथ मानसिक संघर्ष भी कम नहीं था। समाज की सहानुभूति, लोगों की नजरें, बार-बार पूछे जाने वाले सवाल और खुद के भीतर उठती असुरक्षाएं—इन सबने उन्हें भीतर तक झकझोर दिया। लेकिन यहीं से उनकी असली यात्रा शुरू होती है।देव ने धीरे-धीरे खुद को संभालना शुरू किया। उन्होंने यह समझ लिया कि जो हो चुका है, उसे बदला नहीं जा सकता, लेकिन आने वाले समय को बेहतर जरूर बनाया जा सकता है।

उन्होंने अपने लिए एक नया लक्ष्य तय किया—बॉडी फिटनेस और स्टेज परफॉर्मेंस। जहां लोग उन्हें एक दिव्यांग के रूप में देखते थे, वहीं देव ने खुद को एक मजबूत, आत्मविश्वासी और सक्षम इंसान के रूप में स्थापित करने का संकल्प लिया। उन्होंने नियमित अभ्यास शुरू किया, अपने शरीर की क्षमता को समझा और उसे धीरे-धीरे विकसित किया। कड़ी मेहनत, अनुशासन और निरंतर प्रयास के साथ उन्होंने अपने शरीर को इतना मजबूत बना लिया कि देखने वाले हैरान रह जाएं। उनकी फिटनेस केवल शारीरिक ताकत का प्रदर्शन नहीं थी, बल्कि यह उनके आत्मविश्वास और जज़्बे की पहचान बन गई। देव मिश्रा की मेहनत ने उन्हें मंच तक पहुंचाया। उन्हें कई स्टेज शो में अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला। जब वे मंच पर आते हैं, तो उनकी प्रस्तुति केवल एक परफॉर्मेंस नहीं होती, बल्कि एक कहानी होती है—संघर्ष की, साहस की और आत्मविश्वास की।

वोइस टू दिव्यांग

हाल ही में उन्होंने लोकप्रिय रियलिटी शो India's Got Talent के आगामी सीजन के ऑडिशन में हिस्सा लिया। वहां उनकी प्रस्तुति ने जजों और दर्शकों दोनों को आश्चर्यचकित कर दिया। उनका आत्मविश्वास, उनकी ऊर्जा और उनका जज़्बा यह दर्शाता है कि वे केवल एक प्रतिभागी नहीं, बल्कि एक प्रेरणा हैं। यह मंच उनके संघर्ष और मेहनत की पहचान को और व्यापक बना रहा है।

देव की कहानी हमें यह सिखाती है कि जीवन में चाहे कितनी भी बड़ी कठिनाई क्यों न आए, हार मान लेना कभी समाधान नहीं होता। उन्होंने यह साबित किया है कि दिव्यांगता किसी व्यक्ति की सीमाएं तय नहीं करती, बल्कि उसकी सोच, मेहनत और आत्मविश्वास ही उसकी असली पहचान होते हैं। "दिव्यांग सेतु" जैसे मंचों के लिए देव मिश्रा की कहानी एक सशक्त प्रेरणा है। यह हमें जागरूक करती है कि हमें अपने आसपास के दिव्यांगजनों को प्रोत्साहित करना चाहिए, उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिए सहयोग देना चाहिए और उनके आत्मविश्वास को मजबूत करना चाहिए।

आज देव मिश्रा न केवल अपनी जिंदगी को नई ऊंचाइयों तक ले जा रहे हैं, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव भी ला रहे हैं। उनकी कहानी हर उस व्यक्ति के लिए एक उम्मीद है, जो किसी भी कारण से अपने सपनों को अधूरा छोड़ने की सोच रहा है।देव मिश्रा हमें यह सिखाते हैं कि असली उड़ान पैरों से नहीं, बल्कि हौसलों से भरी जाती है।

“कमज़ोर शरीर, लेकिन अटूट हौसलों से जीती एक असाधारण ज़िंदगी”

झारखंड के हज़ारीबाग़ ज़िले के बारा गांव में रहने वाले खिरोधर प्रसाद की कहानी सिर्फ़ भावुक ही नहीं करती, बल्कि जीवन को नए नजरिए से देखने की प्रेरणा भी देती है। महज़ लगभग दस किलोग्राम वज़न और शरीर का करीब 80 प्रतिशत हिस्सा काम न करने के बावजूद, उन्होंने कभी भी उम्मीद का दामन नहीं छोड़ा। उनकी ज़िंदगी कठिनाइयों से भरी रही है, लेकिन उनके चेहरे पर आज भी हिम्मत और विश्वास की चमक साफ दिखाई देती है।

खिरोधर प्रसाद का जीवन बचपन से ही सामान्य नहीं रहा। समय के साथ उनकी शारीरिक स्थिति लगातार बिगड़ती गई, जिसके कारण उनका अधिकांश शरीर निष्क्रिय हो गया। आज वे अपनी दैनिक जरूरतों के लिए भी पूरी तरह आत्मनिर्भर नहीं हैं और काफी हद तक अपनी मां पर निर्भर रहते हैं। लेकिन इस स्थिति ने उनके आत्मसम्मान या जीने की इच्छा को कभी कमजोर नहीं किया। उन्होंने अपनी सीमाओं को स्वीकार जरूर किया, लेकिन उन्हें अपनी पहचान नहीं बनने दिया।

खिरोधर की कहानी परिवार के महत्व को भी उजागर करती है। उनकी मां का समर्पण और निस्वार्थ प्रेम यह दिखाता है कि किसी भी व्यक्ति के जीवन में परिवार की भूमिका कितनी अहम होती है। यह रिश्ता हमें यह एहसास कराता है कि सच्चा साथ हर कठिनाई को आसान बना सकता है।

वोइस टू दिव्यांग

उनकी मां उनके जीवन की सबसे बड़ी ताकत हैं। यह रिश्ता सिर्फ़ देखभाल तक सीमित नहीं, बल्कि गहरे भावनात्मक जुड़ाव, समर्पण और विश्वास का प्रतीक है। खिरोधर की हर छोटी-बड़ी जरूरत में उनकी मां उनके साथ खड़ी रहती हैं। उनका यह अटूट साथ ही खिरोधर को हर दिन आगे बढ़ने की शक्ति देता है। मां-बेटे का यह संबंध हमें यह समझाता है कि सच्चा सहयोग और प्रेम किसी भी मुश्किल को आसान बना सकता है।गांव के साधारण माहौल और सीमित संसाधनों के बावजूद, खिरोधर ने खुद को निराशा में डूबने नहीं दिया। उन्होंने अपने भीतर धैर्य, संतुलन और स्वीकार्यता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है। वे अपनी स्थिति से भागते नहीं, बल्कि उसे स्वीकार कर हर दिन को एक नई चुनौती के रूप में जीते हैं।

खिरोधर की कहानी परिवार के महत्व को भी उजागर करती है। उनकी मां का समर्पण और निस्वार्थ प्रेम यह दिखाता है कि किसी भी व्यक्ति के जीवन में परिवार की भूमिका कितनी अहम होती है। यह रिश्ता हमें यह एहसास कराता है कि सच्चा साथ हर कठिनाई को आसान बना सकता है।खिरोधर प्रसाद का जीवन एक सशक्त प्रेरणा है। यह हमें सिखाता है कि चाहे परिस्थितियां कितनी भी कठिन क्यों न हों, अगर हमारे भीतर जीने की इच्छा, धैर्य और हिम्मत है, तो हम हर चुनौती का सामना कर सकते हैं।उनका जीवन एक स्पष्ट संदेश देता है—कमज़ोर शरीर कभी भी मजबूत इरादों को नहीं रोक सकता।

वोइस टू दिव्यांग

“एक पैर पर नहीं, हौसलों पर खड़ा है शैलेश

भारत के पैरा एथलेटिक्स जगत में Shailesh Kumar आज एक ऐसा नाम बन चुके हैं, जो संघर्ष, मेहनत और आत्मविश्वास की सच्ची मिसाल है। उनकी कहानी केवल एक खिलाड़ी की उपलब्धि नहीं, बल्कि उन सभी लोगों के लिए प्रेरणा है, जो जीवन में किसी भी प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

शैलेश कुमार का जन्म एक सामान्य परिवार में हुआ, लेकिन बचपन से ही उन्हें शारीरिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके एक पैर में समस्या थी, जिसके कारण उनका संतुलन और चलना-फिरना अन्य बच्चों की तरह सहज नहीं था। हालांकि, उन्होंने कभी भी अपनी इस स्थिति को अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया। जहां कई लोग ऐसी परिस्थितियों में निराश हो जाते हैं, वहीं शैलेश ने इसे अपनी ताकत में बदलने का संकल्प लिया।

बचपन से ही खेलों में उनकी गहरी रुचि थी। शुरुआत में उन्हें यह स्पष्ट नहीं था कि वे किस दिशा में आगे बढ़ें, लेकिन समय के साथ उन्होंने हाई जंप को अपना लक्ष्य बनाया। यह खेल न केवल शारीरिक क्षमता, बल्कि मानसिक दृढ़ता और संतुलन की भी मांग करता है। शैलेश ने इन सभी गुणों को अपने भीतर विकसित किया और हर दिन खुद को बेहतर बनाने की दिशा में काम किया।

वोइस टू दिव्यांग

उनकी सफलता का सफर आसान नहीं था। लगातार अभ्यास, अनुशासन और अपने कोच के मार्गदर्शन में उन्होंने कई चुनौतियों का सामना किया। हर दिन उनके लिए एक नई परीक्षा की तरह था, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। उन्होंने हर असफलता को सीख में बदला और आगे बढ़ते रहे।उनकी कहानी हमें यह सिखाती है कि असली ताकत शरीर में नहीं, बल्कि मन में होती है।

शैलेश कुमार की सफलता के पीछे केवल उनकी मेहनत ही नहीं, बल्कि उनका सकारात्मक दृष्टिकोण भी है। उन्होंने हमेशा अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखा और हर कठिनाई को एक अवसर के रूप में देखा। उनकी यही सोच उन्हें लगातार आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रही।

समाज में अक्सर दिव्यांगजनों को सीमित नजर से देखा जाता है, लेकिन शैलेश कुमार ने इस सोच को बदलने का काम किया है। उन्होंने यह दिखाया है कि दिव्यांगता किसी व्यक्ति की पहचान नहीं होती, बल्कि उसकी असली पहचान उसकी मेहनत, लगन और आत्मविश्वास होती है। उनकी सफलता ने न केवल उन्हें सम्मान दिलाया है, बल्कि समाज में एक सकारात्मक बदलाव लाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उनकी मेहनत का सबसे बड़ा परिणाम तब सामने आया, जब उन्होंने World Para Athletics Grand Prix 2026 में हाई जंप (T63 कैटेगरी) में गोल्ड मेडल जीतकर देश का गौरव बढ़ाया। यह जीत केवल एक पदक नहीं, बल्कि उनके वर्षों के संघर्ष, धैर्य और समर्पण का प्रतीक है। इस उपलब्धि ने यह साबित कर दिया कि यदि इरादे मजबूत हों, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता।

"दिव्यांग सेतु" जैसे मंचों के लिए शैलेश कुमार की कहानी एक प्रेरणादायक उदाहरण है। यह हमें सिखाती है कि हमें दिव्यांगजनों को सहानुभूति की नजर से नहीं, बल्कि सम्मान और समान अवसर देने चाहिए। सही मार्गदर्शन और सहयोग मिलने पर वे भी हर क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं।

आज शैलेश कुमार केवल एक सफल खिलाड़ी ही नहीं, बल्कि लाखों युवाओं के लिए एक रोल मॉडल बन चुके हैं। उनकी जीवन यात्रा यह बताती है कि कोई भी बाधा इतनी बड़ी नहीं होती, जिसे पार न किया जा सके। जरूरत होती है तो सिर्फ दृढ़ निश्चय, कड़ी मेहनत और खुद पर अटूट विश्वास की। शैलेश कुमार का जीवन एक सशक्त संदेश है—अगर आपके हौसले बुलंद हैं, तो आप किसी भी ऊंचाई को छू सकते हैं।

वोइस टू दिव्यांग

"शिक्षा से सशक्तिकरण: राखी वर्मा और करन फाउंडेशन की प्रेरक पहल"

समाज में वास्तविक बदलाव तब आता है, जब शिक्षा जीवन को सशक्त बनाने का माध्यम बने। इसी सोच के साथ राखी वर्मा पिछले 25 वर्षों से विशेष शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। उनका उद्देश्य बच्चों को सिर्फ शिक्षित करना नहीं, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाना है। वे मानती हैं कि हर बच्चा अपनी अलग क्षमताओं के साथ जन्म लेता है, इसलिए उन्होंने ऐसे कार्यक्रम विकसित किए जो शिक्षा के साथ जीवन कौशल पर भी केंद्रित हैं। उनकी विशेषता है—हर बच्चे को व्यक्तिगत रूप से समझकर उसके अनुसार शिक्षण देना, जिससे बच्चे शैक्षणिक के साथ भावनात्मक और सामाजिक रूप से भी मजबूत बनते हैं।

इसी दृष्टिकोण से **"करन फाउंडेशन"** की स्थापना हुई, जहां न्यूरोडायवर्स बच्चों को शिक्षा, थेरेपी और जीवन कौशल का समग्र सहयोग मिलता है। यह संस्था आज कई परिवारों के लिए आशा की किरण बन चुकी है।राखी वर्मा का कार्य यह सिखाता है कि सही मार्गदर्शन और धैर्य से हर बच्चा आगे बढ़ सकता है। वे शिक्षा के माध्यम से केवल ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन को नई दिशा और पहचान दे रही हैं।वास्तव में, राखी वर्मा और करन फाउंडेशन शिक्षा के माध्यम से न केवल ज्ञान दे रहे हैं, बल्कि जीवन को नई दिशा और पहचान भी दे रहे हैं।

वोइस टू दिव्यांग

हनुमान जयंती पर मनमोहक प्रस्तुति: मनोदिव्यांग विद्यार्थियों ने जीता दिल

अहमदाबाद के मेमनगर स्थित भीड़भंजन हनुमान मंदिर में हनुमान जयंती के अवसर पर आयोजित लोकडायरा कार्यक्रम में मनोदिव्यांग विद्यार्थियों ने अपनी प्रस्तुति से सभी का दिल जीत लिया। नवजीवन चैरिटेबल ट्रस्ट के अंतर्गत संचालित डॉ. हरिकृष्ण दाह्याभाई स्वामी स्कूल के 12 विद्यार्थियों ने मंच पर अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया।

"हनुमान चालीसा" पर नृत्य और "भक्त प्रह्लाद" की नृत्य-नाटिका कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण रहे। इन प्रस्तुतियों ने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया और दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ दिया।

विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और उत्साह ने यह साबित कर दिया कि सही मार्गदर्शन और अवसर मिलने पर वे भी अपनी अलग पहचान बना सकते हैं। दर्शकों ने जोरदार तालियों के साथ उनका उत्साहवर्धन किया।नवजीवन चैरिटेबल ट्रस्ट का यह प्रयास यह दर्शाता है कि ऐसे मंच बच्चों के आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह आयोजन एक

वोइस टू दिव्यांग

मनोदिव्यांग विद्यार्थियों ने आईपीएल मैच का आनंद लिया...

इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी द्वारा नवजीवन चैरिटेबल ट्रस्ट के मनोदिव्यांग विद्यार्थियों के लिए एक विशेष पहल की गई, जिसके तहत उन्हें शहर में खेले गए आईपीएल मैच का आनंद लेने का अवसर प्रदान किया गया। यह आयोजन विद्यार्थियों के लिए एक यादगार अनुभव साबित हुआ, जहां उन्होंने उत्साह और खुशी के साथ मैच का आनंद लिया।

यह रोमांचक मुकाबला गुजरात टाइटंस और राजस्थान रॉयल्स के बीच प्रतिष्ठित नरेंद्र मोदी स्टेडियम में आयोजित किया गया। स्टेडियम का जीवंत माहौल, दर्शकों का जोश और खेल का रोमांच विद्यार्थियों के लिए एक नया और प्रेरणादायक अनुभव लेकर आया।

इस विशेष आयोजन के लिए नवजीवन चैरिटेबल ट्रस्ट आईसीसी के चेयरमैन श्री जय शाह और इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता है, जिनके सहयोग से यह पहल सफल हो सकी और विद्यार्थियों के चेहरों पर मुस्कान लाई जा सकी।

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट संचालित

संचालित (N.G.O.)

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए निःशुल्क तालीम संस्था

▲ DIVYANG KITE FESTIVAL ▲ SPORTS DAY CELIBRATION ▲ REPUBLIC DAY CELIBRATION ▲ HOLI CELIBRATION
▲ KIDS FASHION SHOW ▲ DRAWING COMPITITION ▲ WORLD ENVIRONMENT DAY ▲ DISABILITY AWARNESS CAMP
▲ ART & CRAFT WORK SHOP ▲ FUN & GAMES (MINUTE TO WIN IT) ▲ NAVRATRI CELIBRATION

★★★ शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करें ★★★

सुमेल ५, हाउस नं.: ४८/डी, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रीज कोर्नर,
असारवा, अहमदाबाद-३८००१६ मो.: 99749 55125, 7575876618

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर